



E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2022; 5(2): 163-167
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 28-08-2023
Accepted: 02-10-2023

Dr. Preeti Adiwai
Assistant Professor
Department of Geography
Brijmohan Lal Sharma
Government Girls College,
Beawer, Rajasthan, India

शहरी क्षेत्रवासियों का जल संरक्षण हेतु जागरूकता स्तर—अजमेर नगर के विशेष संदर्भ में

Dr. Preeti Adiwai

DOI: <https://doi.org/10.33545/26646021.2023.v5.i2c.277>

सारांश

जल एक प्राथमिक प्राकृतिक संसाधन, तथा एक मुख्य यौगिक है। प्राचीनकाल से लेकर अर्वाचीन तक मानव सभ्यता के प्रादुर्भाव एवं विकास का प्रमुख आधार जल ही रहा है। धर्म और दर्शन में भी जल की महत्ता को माना गया है, किन्तु आज मानव जल, जल-संरक्षण, महत्व और जल सुरक्षा के विषय को बिल्कुल भूल गया है। मानव आज इस स्तर पर है कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए किसी भी स्तर पर जा सकता है और जल के अपव्यय को गलत नहीं मानता।

अजमेर ऐतिहासिक रूप से एक पुराना शहर होने के साथ-ही अपनी एक भौगोलिक विशिष्टता भी रखता है। यह नगर चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है इसलिए इसका अधिकांश भाग पथरीला है जिसके कारण वर्षा का सम्पूर्ण जल बह जाता है, अतः इसकी भौगोलिक अवस्थिति जल संग्रहण के अनुकूल नहीं है। इसलिए समय-समय पर राजाओं द्वारा एवं ब्रिटिश शासनकाल में अनेक तालाब, झील, बावड़ियाँ आदि बनवाए गए जिससे जल का संग्रहण हो सके एवं नगरवासियों को जलापूर्ति होती रहे, जिनमें आनासागर फॉयसागर प्रमुख है। प्रस्तावित शोध-पत्र में शोध का प्रारूप वर्णात्मक एवं अन्वेषणात्मक दोनों प्रकार का है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। इसमें अनौपचारिक साक्षात्कार, परिचर्चा, अनुसूचियों, प्रश्नसूची, रासायनिक परीक्षण आदि प्रदूषण समस्या समाधान उपागम को अपनाया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र अजमेर नगर के जल संसाधन से सम्बन्धित है, अजमेर में जल के अँधाधुन दोहन ने स्थिति को काफी गंभीर बना दिया है। इस गंभीर समस्या के हल के लिए वर्षा जल संरक्षण एवं गिरते भू-जल स्तर को बचाने के विभिन्न उपाय सुझाने का प्रयास किया है, जिससे जल संबंधी अप्रिय खतरों को भी कम किया जा सकता है।

कूटशब्द: संसाधन, जल-संरक्षण, जागरूकता, जल-संग्रहण, भू-जल स्तर

प्रस्तावना

जल एक प्राथमिक प्राकृतिक संसाधन है, एक मूल मानवीय जरूरत तथा एक अमूल्य राष्ट्रीय धरोहर है। जल दैनिक जीवन कि लिए महत्वपूर्ण है तथा यह प्रकृति में एक मुख्य यौगिक है। पृथ्वी पर मानव सभ्यता के प्रादुर्भाव के साथ ही जल संसाधनों का महत्व रहा है। मानव जाति का विकास नदी घाटी सभ्यताओं से पारम्परिक रूप से जुड़ा हुआ है। प्राचीनकाल से लेकर अर्वाचीन तक विकास का प्रमुख आधार जल ही रहा है। जल है तो कल है और जल है तो जीवन है। इतिहासकारों के अनुसार महान प्राचीन सभ्यताएँ उन क्षेत्रों में जहाँ वनस्पति वृद्धि अधिक थी, नहीं उत्पन्न हुई बल्कि तुलनात्मक दृष्टि से शुष्क क्षेत्रों में उत्पन्न हुई जहाँ मानव जल नियंत्रित करने तथा विभिन्न मौसमों में नदियों से इष्टतम मात्रा में जल प्राप्त करने में समर्थ था। जल को मानव जीवन के लिए चमत्कारी एवं गुणकारी माना गया है। मनुष्य के शरीर में 70 प्रतिशत मात्रा जल की है। मनुष्य बगैर भोजन के 50-60 दिनों तक रह सकता है लेकिन बगैर पानी के मात्र 2 से 3 दिन ही जी सकता है।

धर्म और दर्शन में भी जल की महत्ता को माना गया है। जल को अधिकांश धर्मों में शुद्धिकारक में जाता है। अधिकांश धर्मों में धार्मिक उद्देश्यों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए जल का उपयोग किया जाता है। सिक्ख एव हिन्दू धर्म में अमृत संस्कार, यहूदी धर्म में बपतिस्मा कहा जाता है। धार्मिक संस्कारों में जल को अधिक महत्व दिया जाता है। देवाभिषेक, शुद्धिकरण, आचमन और अर्चन में जल की अनिवार्यता बनी रहती है। किन्तु आज के समय में जल के मायने बदल गए हैं, आज के समय में जल का अर्थ पानी ही रह गया और किसी के पास इतना समय नहीं है कि वह जल संरक्षण और जल सुरक्षा के विषय में सोचे। मानव सभ्यता आज इस स्तर पर है कि लोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए किसी भी स्तर पर जा सकता है और जहाँ तक जल का प्रश्न है लोग जल के अपव्यय को गलत नहीं मानते।

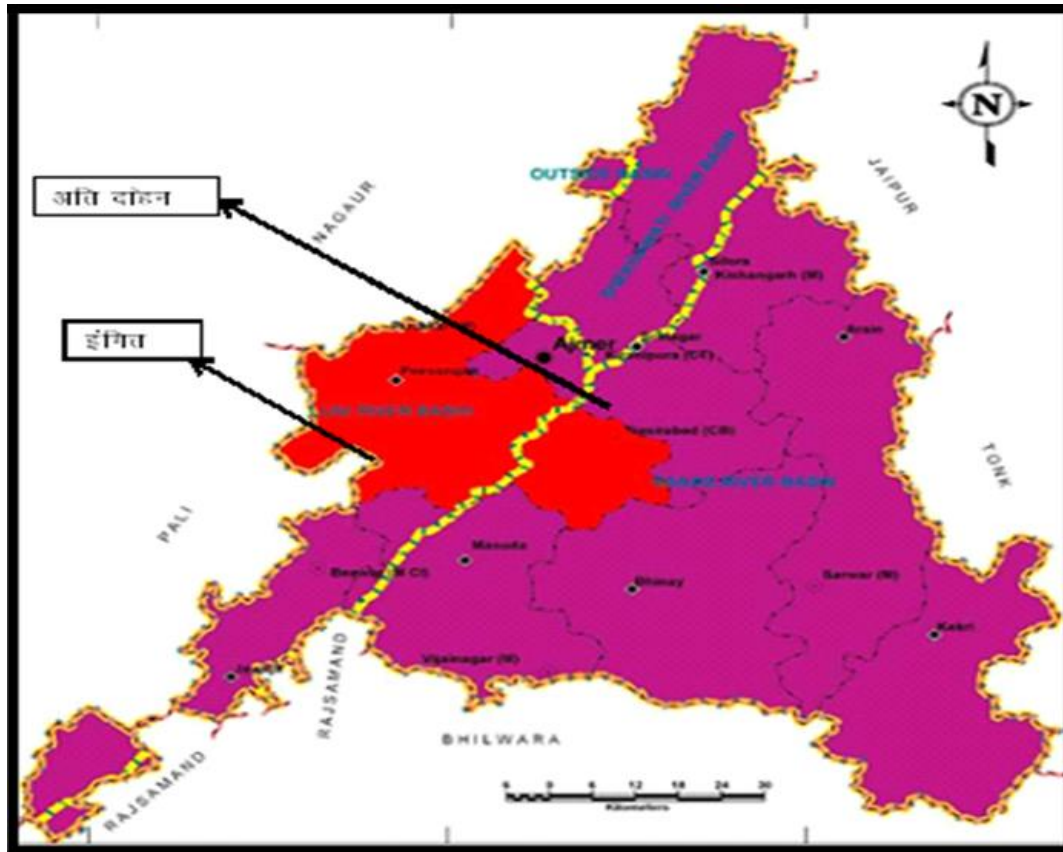
Corresponding Author:
Dr. Preeti Adiwai
Assistant Professor
Department of Geography
Brijmohan Lal Sharma
Government Girls College,
Beawer, Rajasthan, India

लोगों के लिए पेयजल का तात्पर्य उस जल से है जो वे घरों में फिल्टर करके पीते हैं और सामान्य जल वह है जो कि नलों से आता है किन्तु जलापूर्ति विभाग के अनुसार नलों से आने वाला पानी ही पेयजल है।

अजमेर नगर में जल संसाधनों की स्थिति

अजमेर ऐतिहासिक रूप से एक पुराना शहर होने के साथ-साथ अपनी एक भौगोलिक विशिष्टता भी रखता है। यह नगर चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है इसलिए इसका अधिकांश भाग पथरीला है, इसके साथ ही साथ इसका ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर है जिसके कारण बारिश का सम्पूर्ण जल बह जाता है, अतः इसकी भौगोलिक अवस्थिति जल संग्रहण के

अनुकूल नहीं है। इसलिए समय-समय पर राजाओं द्वारा एवं ब्रिटिश शासनकाल में अनेक तालाब, झील, बावड़ियां आदि बनवाए गए जिससे जल का संग्रहण हो सके एवं नगरवासियों को जलापूर्ति होती रहे। सबसे पहले नगर में वर्षा जल संग्रहण के लिए एकमात्र आनासागर की संग्रहण का केन्द्र था जो कि ब्रिटिश शासनकाल तक पेयजल का प्रमुख स्रोत रहा। नगरीय विकास, जनसंख्या वृद्धि एवं विशेष रूप से राजपूताना मालवा रेलवे के मुख्यालय के स्थानांतरण के कारण जलापूर्ति के लिए यह अपर्याप्त पड़ने लगा। अतः अन्य जल संग्रहण स्रोत फॉयसागर बनाया गया। एक अन्य झील का निर्माण आनासागर के अतिरिक्त जल को संग्रहित करने के लिए किया गया था जिससे कि नगर का जल नगर में ही संग्रहित हो जाए, व्यर्थ न बहे।



चित्र 1: अजमेर में अति-दोहित जल क्षेत्र

रासायनिक विश्लेषण

डब्ल्यू.एच.ओ. ने वर्ष 2012 में अजमेर नगर के भूजल संसाधन की जल की गुणवत्ता की ट्यूबवेल, कुएँ व हैण्डपम्प से 28 नमूने प्राप्त किए, यह नमूने पूर्व मानसून व मानसून पश्चात् के समय के लिए गए। जल नमूने उन स्रोत से लिए गए हैं जिनका जल पेयजल व अन्य घरेलू उपयोग हेतु किया जाता है। रासायनिक परीक्षण के लिए 1 लीटर की एसिड वाइड बोतल में नमूने लिए गए एवं जैव परीक्षण के लिए 125 मिलीलीटर की स्ट्रेलाइज बोतल का उपयोग किया गया। यह नमूने नगर के विभिन्न क्षेत्रों से सुभाष नगर, खानपुरा, तारागढ़ रोड, रामगंज, मीना कॉलोनी, काली माता मंदिर, बालाजी मंदिर, रेलवे कॉलोनी, हजारी बाग, जोंसगंज, नारीशाला रोड, धर्मतलाई, केसरगंज, गोलचक्कर, चाँद बावड़ी, महावीर सर्किल, बाबू मौहल्ला, आनासागर सर्किल, वैशाली नगर आदि क्षेत्रों से लिए गए। नमूने के परीक्षण के परिणाम व निष्कर्ष निम्न है।

■ **कठोरता:** कठोरता कैल्शियम व मैग्नीशियम के मिश्रण से होती है। सभी जल नमूनों में कैल्शियम की मात्रा 20 से 600 पी.पी.एम के मध्य है, तथा मैग्नीशियम की मात्रा 10 से 930

पी.पी.एम के मध्य है। दोनों की ही मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक है। डब्ल्यू.एच.ओ. के अनुसार कठोरता की सीमा 660 से अधिक नहीं होनी चाहिए। कुल कठोरता सभी जल नमूने के आधार पर 60 से 990 पी.पी.एम के मध्य है।

- **कैडमियम:** कैडमियम का उपयोग बैटरी, पेन्ट्स, व प्लास्टिक्स के निर्माण में किया जाता है। कैडमियम की अत्यधिक मात्रा ईटाई-ईटाई रोग का कारण बनती है। इससे हड्डी मुलायम व जोड़ों में दर्द होता है। नगर में अत्यधिक व न्यूनतम मात्रा 0.09 एवं शून्य पी.पी.एम. आंकी गई।
- **सीसा:** नगर के भूजल में सीसा की मात्रा जल में 0 से 0.07 पी.पी.एम के मध्य है। सूक्ष्म मात्रा में सीसा प्राकृतिक चट्टानों से जल में पहुँचता है पर हानिकारक सीसा उद्योगों जैसे बैटरी, चमड़ा उद्योग तथा रासायनिक अपशिष्ट के द्वारा भूजल में पहुँचता है।
- **पारा:** सामान्यतः पारा विभिन्न प्रकार की चट्टानों के अलावा कोयला आदि में भी प्राकृतिक रूप में पाया जाता है।

पेयजल के लिए पारे की अधिकतम सीमा 0.002 पी.पी.एम से अधिक नहीं होनी चाहिए। नगर के भूजल में पारे की मात्रा 0–0.025 के मध्य में है। कहीं-कहीं पर पारे की मात्रा अनुमान्य सीमा से अधिक है।

- **कुल घुलनशील पदार्थ:** नगर में भूजल में कुल घुलनशील पदार्थ 280 से 5660 पी.पी.एम. के मध्य है जो कि अनुमान्य सीमा से बहुत अधिक है।
- 1. **फ्लोराइड:** भूजल में फ्लोराइड प्राकृतिक रूप से या मानव क्रियाकलापों से मिलता है। अजमेर जिले में फ्लोराइड की मात्रा 0.1 पी.पी.एम से 11 पी.पी.एम के मध्य है। अजमेर जिले की शैलों में ही फ्लोराइड की मात्रा अधिक पायी गई है। अधिक मात्रा में फ्लोराइड की सान्द्रता दंत व हड्डी रोग तथा फ्लोरोसिस बीमारी का कारण बनती है। नगर में फ्लोराइड की सान्द्रता 0.3 से 6.8 पी.पी.एम के मध्य है।
- 2. **क्लोराइड:** नगर के भूजल नमूनों में क्लोराइड की सान्द्रता 40 से 1360 पी.पी.एम के मध्य है। पीने वाले जल में क्लोराइड नमकीन स्वाद पैदा करता है।
- 3. **नाइट्रेट:** सामान्यतः सतही जल नाइट्रेट सूक्ष्म मात्रा में उपस्थित होता है परन्तु इसकी मात्रा भूजल में अधिक हो सकती है। नगर के जल नमूनों में नाइट्रेट की सान्द्रता 5 से 210 पी.पी.एम के मध्य है। अधिक नाइट्रेट से यूट्रोफीकेशन, तथा छोटे बच्चों में ब्लू बेबी रोग हो सकता है।
- 4. **सल्फेट:** सभी प्रकार के प्राकृतिक जल में सल्फेट आयन पाया जाता है। सभी जल नमूनों में सल्फेट की सान्द्रता 48 से 230 पी.पी.एम. के मध्य है जो कि निर्धारित सीमा में है। अधिक सल्फेट जल को कड़वा स्वाद प्रदान करती है।
- 5. **क्षारीयता:** जल की अम्ल को उदासीन करने की क्षमता को क्षारीयता कहते हैं। क्षारीयता का अर्थ जल में घुले हुए बाईकार्बोनेट, कार्बोनेट तथा हाईड्रॉक्सिल आयनों के घुलने से है। नगर के भूजल नमूनों में ये क्षारीयता 100 से 670 पी.पी.एम के मध्य है। मानव के लिए क्षारीयता नुकसानदायक नहीं है परन्तु इसके द्वारा कई बार जल का स्वाद बदल जाता है।
- 6. **पी.एच.:** अजमेर नगर के सभी भूजल नमूनों में पी.एच. निर्धारित सीमा में है जो कि 7.2 से 7.8 पी.पी.एम के मध्य है।
- 7. **वैद्युत चालकता:** जल की वैद्युत चालकता का तात्पर्य जल में घुलित रसायनों से है। जितने ज्यादा रसायन जल में घुले होंगे वैद्युत चालकता उतनी ही ज्यादा होगी। अजमेर नगर के भूजल में वैद्युत चालकता 403.2 से 4968 μ mohs/cm के मध्य है जो कि अनुमान्य सीमा से अधिक है।

भूजल परीक्षण से ये स्पष्ट होता है कि सभी हैण्डपम्प किसी न किसी जैविक व अजैविक प्रदूषण से युक्त है। जो जल स्रोत आनासागर के आस-पास है वो बुरी तरह से प्रदूषित है। झुग्गी बस्तियों व मोटर गैरेज वाले क्षेत्रों से लिए गए नमूनों में धात्विक प्रदूषण अधिक है। अजमेर नगर सामान्यतः पथरीला क्षेत्र है यहाँ का भूजल फिल्टर नहीं हो पाता है, जबकि अजमेर से ही 10 किलोमीटर दूर पुष्कर क्षेत्र की भूजल गुणवत्ता में अजमेर के भूजल से बहुत अच्छा है क्योंकि वहाँ भूजल रेतीले रन्धों से रिस कर फिल्टर हो जाता है।

शोध के उद्देश्य

अजमेर नगर में घरेलू कार्यों, उद्योगों और सिंचाई के रूप में हो रहे जल के अविवेकपूर्ण दोहन का आंकलन करना तथा इस विषय में वहाँ के निवासियों के जागरूकता स्तर को जानना।

शोध विधि तंत्र

प्रस्तावित शोध अजमेर नगर के जल संसाधन से सम्बन्धित है,

शोध का क्षेत्र अजमेर नगर एवं उसके आस-पास के जल स्रोत झीलें, तालाब, बावड़ियाँ, आदि हैं। शोध का प्रारूप वर्णात्मक एवं अन्वेषणात्मक दोनों प्रकार का है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग करेंगे।

प्राथमिक आँकड़ों का संग्रहण क्षेत्र-सर्वेक्षण के द्वारा किया जाएगा इसमें अनौपचारिक साक्षात्कार, परिचर्चा, अनुसूचियों, प्रश्नसूची के माध्यम से स्थानीय जन एवं विभिन्न संगठनों से बात करके जल स्रोतों के महत्व उनसे सम्बन्धित समस्या के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे, जल स्रोतों का रासायनिक परीक्षण करके यह जानकारी प्राप्त करेंगे कि उसमें किस प्रकार का रसायन मिला हुआ है और कितनी मात्रा में मिला हुआ है तथा उसका जल की गुणवत्ता पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

शोध में चयन यादृच्छिक पद्धति से करेंगे द्वितीयक आँकड़ों को शोध-पत्र, पुस्तकों, नियतकालिक जर्नल, प्रकाशित प्रतिवेदनों, विभिन्न सरकारी विभागों तथा अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेजों आदि से प्राप्त करेंगे। आँकड़ों का प्रदर्शन सांख्यिकीय विधियों जैसे—तालिका, आरेखों, आदि के माध्यम से करेंगे, प्राकृतिक जल स्रोतों के प्रदूषण के प्रभाव को दर्शाने के लिए समस्या समाधान उपागम को अपनाया गया है।

प्राथमिक शोध प्रविधि

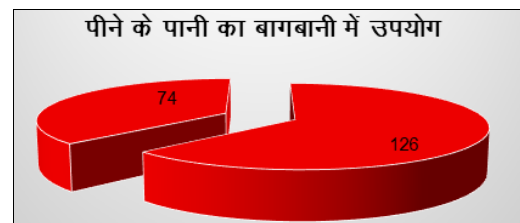
इसके अंतर्गत पर्यवेक्षण आधारित क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा किया गया है, जिसमें निम्न पक्षों को सम्मिलित किया गया है :

1. सामाजिक परिवेश
2. सांस्कृतिक परिवेश
3. आर्थिक परिवेश
4. प्राकृतिक भू-दृश्य
5. जल प्रदूषण

सर्वेक्षण हेतु नगर में प्रतिदर्श चयन कर प्रश्नोत्तरी पद्धति से अन्वेषण किया गया है। साथ ही स्थानीय लोगों का साक्षात्कार, क्षेत्र भ्रमण, अवलोकन, वैज्ञानिक विश्लेषण एवं परीक्षण तथा मूल्यांकन को सम्मिलित किया गया है। सांख्यिकीय आँकड़ों के वर्गीकरण एवं विश्लेषण हेतु कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण

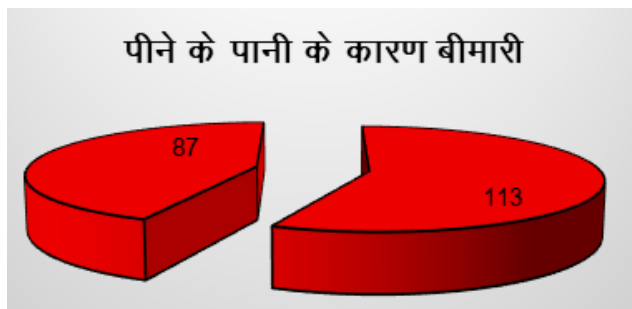
पीने के पानी का बागबानी में उपयोग		
उत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	126	63
नहीं	74	37
	200	100



व्याख्या

— जल का उपयोग हम विविध प्रकार के प्रयोजनों में करते हैं, पीने से लेकर नहाने तक, किन्तु आज के समय में अजमेर में जल की सप्लाई बीसलपुर से होती है और वस्तुतः जल की कमी बनी रहती है। इस कमी के बावजूद 63 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि और कोई स्रोत ना होने के कारण वे पीने के पानी का उपयोग बागबानी में भी करते हैं, जबकि 37 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं करते हैं।

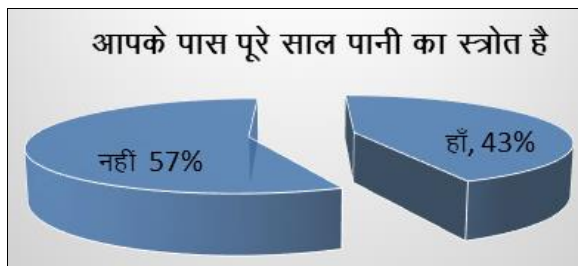
पीने के पानी के कारण बीमारी		
उत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	113	56.5
नहीं	87	43.5
	200	100



व्याख्या

— अजमेर में जल की सप्लाई बीसलपुर से होती है और बाँध में की वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट लगा हुआ है, फिर भी 56.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि इस पानी से उन्हें पेट की कई बीमारियाँ हो जाती हैं। — शोधकर्ता ने पाया कि नगर में कई जगह से पाइपलाइन टूटी हुई है जिसके कारण यह पानी प्रदूषित होता रहता है और नगरवासियों के बीमार होने की संभावना बनी रहती है।

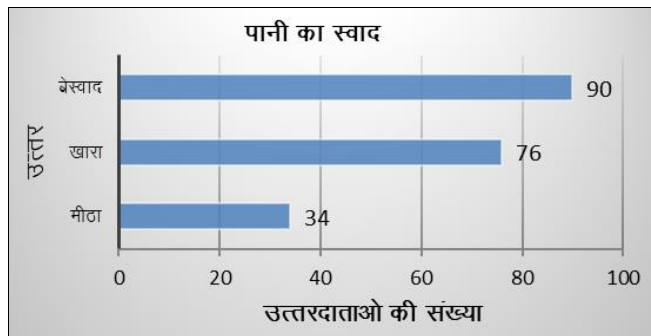
आपके पास पूरे साल पानी का स्रोत है		
उत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	87	43.5
नहीं	113	56.5
कुल	200	100



व्याख्या

—43.5 प्रतिशत लोगों ने कहा कि उनके पास साल भर पानी का स्रोत है, यह वो लोग हैं जो तालाब या बावड़ी के आस-पास के क्षेत्र में रहते हैं और उसका जल विभिन्न उपयोगों में लेते हैं। 56.5 प्रतिशत लोगों ने कहा कि उनके पास साल भर पानी का स्रोत नहीं है, यह वो लोग हैं जो जल के लिए बीसलपुर पर ही निर्भर हैं।

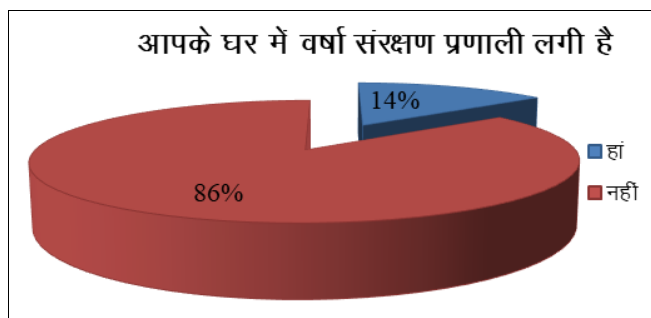
पानी का स्वाद		
उत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
मीठा	34	17
खारा	76	38
बेस्वाद	90	45
	200	100



व्याख्या

— जैसा कि ऊपर दिए गए विवरण से स्पष्ट है कि बीसलपुर बाँध में ट्रीटमेंट प्लांट लगा है और सारा जल ट्रीट होने के बाद ही सप्लाई किया जाता है, किन्तु नगर में कई जगह पाइपलाइन टूटी होने के कारण जल में कई प्रकार की अशुद्धियाँ और प्रदूषित तत्व मिलते रहते हैं जिससे पानी प्रदूषित होता रहता है और पानी का स्वाद परिवर्तित हो जाता है। 70.4 प्रतिशत लोगों ने बताया कि उनके यहां होने वाली पानी की सप्लाई का स्वाद मीठा होता है, 19.6 प्रतिशत लोगों ने पानी का स्वाद खारा बताया और 10 प्रतिशत लोगों ने कहा कि जल बेस्वाद होता है।

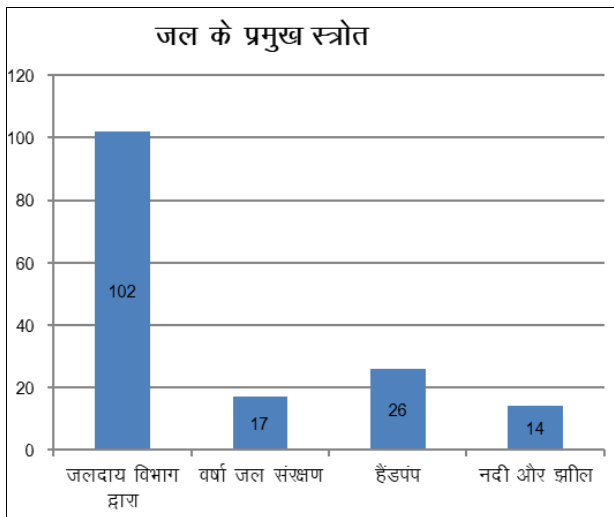
आपके घर में वर्षा संरक्षण प्रणाली लगी है		
उत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	29	14.5
नहीं	171	85.5
कुल	200	100



व्याख्या

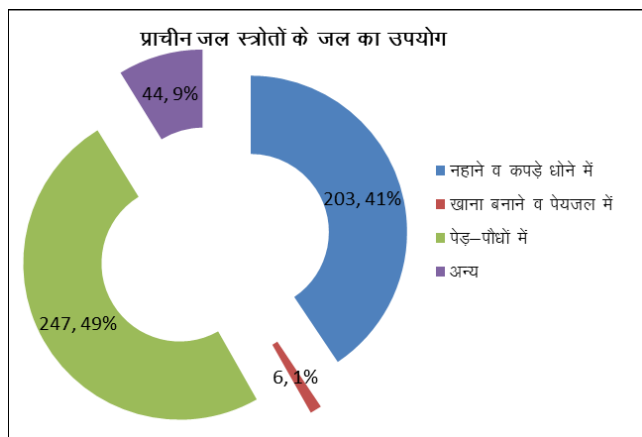
— वर्षा जल का संग्रहण अजमेर जैसे स्थान के लिए अतिउपयुक्त है और सरकारी एजेंसियों के द्वारा इस संदर्भ में कई प्रकार की योजनाएँ भी चलाई गई हैं किन्तु लोग वर्षा जल संग्रहण के लिए ज्यादा उत्साहित नहीं हैं। मात्र 14.5 प्रतिशत उत्तरदाता ही वर्षा जल का संग्रहण करते हैं और शेष 85.5 प्रतिशत लोग वर्षा जल संग्रहण के बारे में जानते हैं किन्तु उसका पालन नहीं करते हैं।

पानी का प्रमुख स्रोत		
उत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
जलदाय विभाग द्वारा	102	51
वर्षा जल संरक्षण	17	8.5
हैंडपंप	26	13
नदी और झील	14	7
बोरिंग	29	14.5
अन्य	12	6
कुल	200	100



व्याख्या

— यदि हम अजमेर में जल के स्रोतों का वर्गीकरण करें तो हम देख सकते हैं कि सबसे कम प्रतिशत अन्य स्रोतों का है, 8.5 प्रतिशत लोग वर्षा जल संरक्षण भी करते हैं जो कि आवश्यकता से बहुत कम है। सबसे अधिक 51 प्रतिशत जलदाय विभाग द्वारा प्रदत्त जल का है अर्थात् बीसलपुर बाँध के द्वारा। इसके अलावा जल को हैंडपंप के द्वारा निकाला जाता है जिसका प्रतिशत 13 है, तालाब, बावड़ियों और झीलों से 5 प्रतिशत पेयजल की आपूर्ति होती है।



प्राचीन जल स्रोतों के जल का उपयोग

सारांश एवं सुझाव

अजमेर में जल के अंधाधुन दोहन ने स्थिति को काफी गंभीर बना दिया है और इस विषय पर सभी को सोचने एवं इस समस्या का हल निकालने को विवश कर दिया है। इस गंभीर समस्या के हल का एकमात्र सबसे सरल एवं सस्ता उपाय वर्षा के जल को विभिन्न माध्यमों द्वारा संरक्षित करके किया जा सकता है। इससे भू-जल लगातार गिरते स्तर को तो बचाया ही जा सकता है साथ ही जल जमाव व बाढ़ जैसे अप्रिय खतरों को भी कम किया जा सकता है। पानी का दुरुपयोग हर स्तर पर कानून के द्वारा, प्रचार माध्यमों से कारगर प्रचार करके और विद्यालयों में पर्यावरण की ही तरह जल संरक्षण विषय को अनिवार्य रूप से पढ़ा कर रोका जाना बेहद जरूरी है। अब समय आ गया है कि केन्द्रीय और राज्यों की सरकारें जल संरक्षण को अनिवार्य विषय बना कर प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर तक नई पीढ़ी को पढ़वाने का कानून बनाएँ। बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए बीसलपुर पर निर्भरता पर्याप्त नहीं है। इसके लिए वैकल्पिक स्रोत तलाश करना आवश्यक है, जिसमें प्राचीन बावड़ियाँ, तालाब कुएँ

महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उनको उपयोग में लेना प्रारंभ करना चाहिए। प्रशासन को इन स्रोतों के जल को शुद्ध करवाकर शहर में जल आपूर्ति शुरू करवानी चाहिए। शहर में जल आपूर्ति इस प्रकार की जानी चाहिए कि इन स्रोतों का जल शहरवासी अन्य कार्यों में उपयोग ले सकें एवं बीसलपुर परियोजना का जल केवल पेयजल एवं खाने में करें।

संदर्भ सूची

1. आर्थिक समीक्षा (2012-13) आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, राजस्थान, जयपुर
2. कुमार, आनन्द (2008) सामाजिक वानिकी और पंचायत, कुरुक्षेत्र।
3. खण्डेलवाल, एम.के. (1984) औषधीय पौधे, जनजातियों द्वारा रोगों में उपयोग।
4. खुल्लर, डी.आर. (2010) भौतिक भूगोल के आधार एवं भारत का भौतिक पर्यावरण, सरस्वती हाऊस, नई दिल्ली।
5. खुल्लर, डी.आर. (2008) भारत का भूगोल, टाटा मेग्राहिल, नई दिल्ली।
6. चान्दना, आर.सी. (2006): जनसंख्या का भूगोल, कल्पनीय पब्लिशर्स।
7. गौतम, सुशील कुमार (2003) योजना, भारत में औषधीय फसलों की खेती।
8. जैविक खेती, पत्रिका (2008) कृषि सूचना, कृषि निदेशालय, जयपुर, राजस्थान
9. ज्योत्सना, मधु (2006) भारत में जल प्रबंधन, भूगोल।
10. बीसलपुर जल आपूर्ति परियोजना पुनर्वास योजना, वोल्यूम 2।
11. जयपुर नगर निगम, शहर विकास योजना, पेज 9।
12. Our water resources, A Yojna Survey, Periodical, Vol. 20, n. 1, New Delhi, Jan 1976, Page 15.
13. Agarwal V. Vaish AK, Vaish P. Ground water quality, focus on Fluoride and Fluorosis in Rajasthan, curr. sci. 1997;73:743.
14. मिश्रा.एस.पी. (2007) "जल संसाधन प्रबंधन एवं संरक्षण अविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ.सं. 100
15. मोदी अनिता (2009), "वैश्विक जल संकट विकट चुनौती बुक एनक्लेव जयपुर पृ.सं. 15.
16. Chatterjee R. Ground Water Management Rajasthan perspective; c2013. p. 7.